1–जन्मदिन

जन्म दिन मुबारक हो ...
धन्यवाद श्रीमान् जी और आपको भी...
मुझे क्यों ?
नये साल की ।
किस उधेड़–बुन में लगे हो ।
कुछ भी तो नही ।
श्रीमान् जी आज आपके लिये दो–दो खुशी का दिन है ।
जनता हूं एक जन्म दिन दूसरा नया साल ।
पर चिन्ता का नही ।
लेकिन चिन्तन का तो है ?
क्यों.....क्या कमी है । अच्छे पढे लिखे हो। अच्छे रचनाकार हो । अखबार की सुर्खियों में भी आते रहते हो । बड़ी कम्पनी में नौकरी करते हो । बेट–बेटी अच्छे स्कूल कालेज में पढ रहे है और क्या चाहिये ?
ये तो बाहरी रूप है । आन्तरिक रूप में कभी झांका है क्या ?
नही ...
सैतालिस साल के जीवन में क्या पाया क्या खोया ? इसी विषय पर तो चिन्तन कर रहा हूं। भाई पेट में भूख और खुली आंखों में सपनें लेकर पढाई किया । ग्रेजुयेट की डिग्री हाथ आते ही कई सालों की बेरोजगारी ने बूढा बना दिया । मां का साया भी उठ गया । बडी मुश्किल से नौकरी मिली फिर पढाई शुरू कर दिया । डिग्री के मामले में तो धनी हो गया पर पद और दौलत की विपन्नता छाती का बोझ बनी रही । ईमानदारी,पाबन्दी,कर्म को पूजा समझने वाला मैं तरक्की की दौड़ पीछे लतिया दिया गया । घरवाली डाक्टर के षणयन्त्र का शिकार होकर दर्द में जीवन काट रही है । न तो बूढी व्यवस्था वाले समाज ने सम्मान दिया और न ही आधुनिक श्रम की मण्डी ने । उूंची–उूंची डिग्रियां होने के बाद भी जातीय श्रेष्ठ योग्यता प्राप्त उच्चपदाधिकारियों के बीच ही नही छोटे कर्मचारियों के बीच भी उपहास का पात्र हो गया हूं ।कहां काम आयी उूंची–उूंची डिग्रियां बूढे समाज में। क्या यह चिन्तन का मुद्दा नही ?
परिवर्तन होगा, कर्म पर अडिग रहो,आत्मविश्वास,ईश्वर में आस्था और कल से उम्मीदें बनाये रखो ।
यही है मुबारकबाद ।

2–इंतजार

कामराज शहर में एक बेसहारा औरत को कानून की मुहर लगवाकर पत्नी बना लिये । वही पत्नी धोखेबाजी से कामनरायन की करोड़ों की सम्पति हथिया कर बेदखल कर दी । वे आहत गांव लौट आये और भाईयों के साथ रहने लगे । गम को भूलाने के लिये पूरी तरह से नशे के आदी हो गये । नशे ने उन्हे लाकर खटिया पर पटक दिया । वे चलने फिरने की स्थिति में भी नही रहे । शरीर सड़ने लगा था । मंझला भाई भोजराज और उसकी पत्नी हर

सम्भव सेवा–सुश्रुषा करते । भाई को जीवित सडते हुए देखकर छोटा भाई शोभराज मुंह पर गमछा बांधकर मूर्छित भाई कामराज से बोला भइया हम सुसराल जा रहे है।
कामराज–जल्दी आना समय कम है । अब इन्तजार नही होता ।
शोभराज सपरिवार ससुराल चला गया भाई को मृत–शैय्या पर छोड़कर । दूसरे दिन सुबह शोभराज का मोबाईल घनघना उठा । भोजराज मोबाईल पर बोला भाई अब तो आ जा.... भईया चल बसे तुम्हारा इन्तजार करते करते ।

3–वर्दीवाला भिखारी

ट्रैफिकजवान आटो रिक्शा को बेंत से ठोंकते हुए बोला निकल दस का नोट और बढ आगे ।
चालक–अभी बोहनी नही हुई ।
जवान सुबह से दस ट्रेन आ चुकी और तुम्हारी बोहनी नही हुई ।
चालक–नही ।
जवान –अभी आगे बढ । आकर दे देना ।
चालक–एक दिन तो बख्श देते ।
आटो कुछ दूर बढा तो आटो में बैठे पहली बार शहर आये दादाजी पौत्री से बोले बीटिया शहर में भीखारी वर्दी में भीख मांगते है क्या ?
पौत्री–नही दादाजी कैसी बात करते हो ।
इतने में चालक बोला वर्दीवाला भीखारी नही लूटेरा है ।
दादाजी–अच्छा समझा भीखारी नहीं घूसखोर है।
चालक–काश घूसखोरी के वायरसों का सफाया हो जाता तो अपना देश फिर से सोने की चिड़िया बन जाता।

4– बैड डे

कैसी बिती छुट्टी ?
बढिया । आप बताईये क्या कुछ नया हुआ दफतर में?
कुछ नही तुम उधर छुट्टी पर गये इधर बांस ने कम्पनी डे मनवा दिया । बहुत मजा आया। सभी सपरिवार शामिल हुए ।
क्या ?
चौक क्यो रहे हो ?
मैं छुट्टी पर था । मेरा परिवार तो नही ।
फोन नही लगा ।
आफिस कार है ,ड्राइवर है, अटेण्डेण्ट है। किसी को भेजकर मेरे परिवार को खबर तो दी जा सकती थी।
तुम जैसे छोटे लोगों की योग्यताओं,हितों और हकों की तो यहां चिता जलती है क्या तुमको मालूम नही?
हां पिछले कुछ सालों से तो कम्पनी डे मेरे और मेरे परिवार के लिये बैड डे बन गया है ।

5– यात्री

कण्डक्टर साहब आपके समर्पण भाव को सलाम ।

कैसा समर्पण श्रीमान् ?
मानवता और कर्तव्यनिष्ठा के प्रति ।
इस लायक कब हो गया ?
मानवतावादी और कर्तव्यनिष्ठ महापुरूष सबको नही दिखाई पड़ते ।
आपको कैसे दिख गया ?
यात्री बूढी मां का टिकट आपने जो खरीदा ?
तनिक सी मदद और इतना उंचा स्थान ?
कर्तव्यपालन के साथ मानवसेवा आदमी का दर्जा बढा देती है कण्डक्टर साहब।
सड़क पर भागते–भागते बेसहारा और गरीब लोगो का दर्द महसूस करने की मदद की आदत हो गयी है
कण्डक्टर साहब अपना नाम बतायेगें?
राजेशकुमार ।
नमन करता हूं आपको और आपकी आदत को भी। ये आदत नर से नारायण बना देगी ।
आप कौन है ?
एक यात्री ।

6– आस्था

साहब पुष्पगुच्छ स्वीकार कीजिये ।
किस खुशी में रोहन ?
आपके जन्म दिन की खुशी में।
बेटा शुभकामना शब्द बोल देता, तुम्हारे अर्न्तमन की शुभकामना मुझे मिल जाती । पैसा खर्चा करने की क्या जरूरत थी ? दैनिकवेतनभोगी हो । तंगी से गुजर रहे हो ।
जानता हूं गरीब हूं पर आस्था से नही। स्वीकार कीजिये साहब।
तुम्हारी आस्था के सामने नतमस्तक हूं रोहन।
साहब ये पुष्पगुच्छ स्वीकार कीजिये ।
मुझमें अस्वीकार करने का सामर्थ्य कहां । आ गले से लग जा रोहन ।

7– कामयाबी

राहुल तुम पढाई पर ध्यान नही दे रहे हो । मालूम है तुम्हारी पढाई पर कितने का खर्चा आ रहा है ।
हां पापा ।
मालूम है तुमसे कितनी उम्मीदे है ।
हां पापा सब मालूम है ।
इसके बाद भी पढाई पर ध्यान नही ।
पापा रटू तोता नही बनना है ।
फिर क्या बनना चाहते हो ?
काबिल पापा ।
कामयाब हो जाओगे ।

रटू तोता बनकर तो नही ।
क्या ?
हां पापा । मन–माफिक काबिलयत हासिल कर लेने दो । कामयाबी मेरे पीछे पीछे चलेगी ।

8–वंश

मम्मी सुधार भईया के नाना तुम्हारे सामने क्यो रो रहे थे ।
वंश के गम में । तीन–तीन बेटियां है । बेटा एक भी नही ।
क्या ?
हां ।
मम्मी तुम्हे और पापा को चिन्ता नहीं ?
नहीं ।
सुधार भईया के नाना को क्यों ?
मर्णिकर्णिका कौन ले जायेगा ?
मम्मी बेटियां भी तो मर्णिकर्णिका ले जा सकती है ना ?
हां बेटी क्यों नहीं । बेटियां भी तो हमारी वंश है ।

9–टोपी

पापा काश अपना घर भी ऐसा होता ।
बेटा मेहनतकश ऐसा घर कैसे बना पायेगा । ऐसी सुख सुविधा कैसे जुटा सकेगा ?
किसका घर है ।
सफेदटोपी वाले का ।
मैं भी टोपी वाला बनूंगा पापा ।
नहीं बेटा ।
क्यों पापा ।
जनता का खून चूसने वाला । नोट खाने वाला, चारा खाने वाले । ताबूत लूटने वाला कोई मेरे बेटा को कहे मुझे पसन्द नही ऐसी तरक्की । इससे बेहतर तो मर जाना होगा मेरे लिये बेटा ।
पापा ना खून चूसूंगा । ना नोट खाने वाला बनूंगा । ना कोई दूसरे तरह का भ्रष्टाचार करूंगा और ना सफेट टोपी पर कालिख पोतूंगा । जन–देश सेवा का काम करूंगा और तुम्हारी ईमानदारी को आगे बढाउंगा । विश्वास करो पापा।
जुग–जुग जीओ मेरे लाल ।

10–न्यूज

कैसा पेपर लेकर खड़े हो ?
न्यूज है सर ।
कैसी न्यूज है ?
मुझे पुरस्कार मिल रहा है ।
क्या .....?
येस सर । इन्टरनेट पर प्रसारित न्यूज है ।

इन्टरनेट से प्रिण्ट लिया है ?

हां ।

इतना सुनते ही सर की छाती पर जैसे पहाड़ गिर पड़ा । वे बोले रख दो पढ लूंगा । बाद में देखने में आया प्रिण्ट कचरे के डिब्बे से गुहार लगा रहा था ।

11–कामधेनु

साहब है ?

नही है साहब । आपतो बैठिये सर । अरे रोशन साहब के लिये चाय पानी लाना ।

साहब कब मिलेगें ।

लोकल गये है ।

साहब के अलावा और कोई है क्या ?

है ना सर और अधिकारी ।

है क्या कोई ?

अभी तो कोई नही है ।

यार जब आता हूं तुम ही मिलते हो काम के बोझ से दबे हुए। क्या तुम्हारे पास व्यक्तिगत काम नही होता औरों की तरह ?

साहब आफिस टाइम है ।

औरों के लिये नही

मैं अपना फर्ज पूरा कर रहा हूं । बेईमानी मेरी नियति नही ।

यार तुम तो कामधेनु हो पर कसाई के खूंटे से बध गये हो ।